t'kiqj d: mjk¡o ykd lkfgR; ,o laLd`fr dk fo'ys"k.kRed v/;;u

Hkfedk

प्राचीन काल से ही भारत वर्ष में कई प्रकार की जातियाँ निवास करती आ रही है। इनमें से अधिकांश जातियाँ आज की अपनी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की विभिन्न परम्पराओं का निर्वाह करती चली आ रही है। पूरी तरह से प्रकृति के साथ पहाड़ों–पठारों से घिरे वन प्रदेशों में जीवन–यापन करने वाली इन जातियों को जनजाति या आदिवासी के नाम से जाना जाता है। झारखण्ड में बड़ी संख्या में आदिवासियों का निवास है। इसी तरह मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़िसा, बंगाल के पड़ोसी इलाकों में आदिवासियों की संख्या फैली हुई है।

भारतीय उपमहाद्वीप विविधताओं के लिए विश्व प्रसिद्ध है। प्राकृतिक ऐतिहासिक, भाषिक प्रजातीय व सांस्कृतिक आदि दृष्टि से इसकी विभिन्नताएँ रेखांकित की जाती है। अर्थात् यहाँ जितने प्रदेश है उतनी ही भाषा संस्कृति भी है। यहाँ 28 राज्य तथा 8 केन्द्र शासित प्रदेश है। आन्ध प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, ओड़िसा, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम, तमिलनाडु, तेलांगना, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, पश्चिम बंगाल, और झारखण्ड, केन्द्र शासित प्रदेश में दिल्ली,

अंडमान–निकोबार द्वीप समूह, चण्डीगढ़, दादरा और नगर हवेली और दमन द्वीप, लक्ष्यद्वीप, पाण्डिचेरी, जम्मू कश्मीर, लद्दाख।

भाषा वैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन मनन् के हिसाब से भारत की भाषाओं बोलियों को आर्य, द्रविड, अग्निकुल एवं वर्मा तिब्बती चार वर्गों में विभाजित किया है। वहीं भाषा में उराँव जनजातियों की मातृभाषा कुँडुख है जिसकी अपनी महत्व है। उराँव जाति के अस्तित्व की रक्षा के लिए कुँडुख़ भाषा संस्कृति एवं इसके समग्र साहित्य की जानकारी अपेक्षित है। किसी भी जाति की सांस्कृतिक पहचान साहित्यिक समृद्धि और जनता की जागृत चेतना ही इसके मापदण्ड है।

लोक साहित्य अथवा शिष्ट साहित्य का मानवीय पहलू वर्तमान से भविष्यत तक क्रमबद्ध हस्तांतरित होता चलता जाता है। इसका अध्ययन कर उस समाज के आन्तरिक विशिष्ट गुणों अवगुणों के सापेक्ष अवलोकन से तद् समाज की वास्तविक अवस्था या स्थिति का आकलन हो सकता है।

ifjdYiuk %

निःसंदेह भौगोलिक अवस्थाएँ, सामाजिक परिवेश एवं ऐतिहासिक संदर्भ किसी भी जाति के विचार, भाव, भाषा पर प्रभाव डाल कर उसे परिवर्तित कर डालती है और सहज तौर पर ये कारक उसके जातीय स्वभाव और भाषागत बदलाव से एक ही जाति में भिन्नता ला देती है।

कहना न होगा कि जशपुर (छत्तीसगढ़) का विशाल क्षेत्र भी कुँडुख़ भाषी क्षेत्र है। जहाँ उराँवों की बहुलता झारखण्ड के साथ साभ्य स्थापित करते हैं। दोनों ही प्रदेशों के जनजीवन संगीतमय हैं, गीत और नृत्य इसके जीवन के अभिन्न अंग है। दोनों के लिए ही चलना ही नृत्य है, बोलना ही गीत'' जैसी उक्ति लागू होती है। भाषिक संदर्भ में कहा जा सकता है कि यह क्षेत्र द्रविड, ऑष्ट्रिक और आर्य भाषाओं की संगम स्थल है। दोनों ही के प्राकृतिक बनावट पठार पर अवस्थित सघन वनों ऊँचे पहाड़ों झरनों से आच्छादित होने के साथ–साथ खनिज सम्पदा से सुसम्पन्न है।

यही करण है कि यहाँ की विविध प्रजाति भाषा और विशिष्ट संस्कृति, विद्वानों देशी विदेशी अनुसंधानकर्त्ताओं को उत्कृष्ट करती है और यही करण है कि यहाँ के जनजातियों की भाषा–संस्कृति पर कई उल्लेखनीय कार्य हुए है।

कमोबेस कुँडुख़ भाषी यह संधि क्षेत्र झारखण्ड, छत्तीसगढ़ (जशपुर) एक रूपता में जुड़ा हुआ नजर आता है। उड़िसा, बंगला देश, नेपाल, बिहार, असम, अंडमाननिकोबार, महाराष्ट्र, पंजाब, उतर प्रदेश, मध्य प्रदेश, भूटान, वर्मा आदि तक इस भाषा का विस्तार बतलाया जाता है। संथाल जनजाति की आबादी के बाद उराँवों की आबादी अधिकतम मानी जाती है। 2011 की सरकारी जनगणना के अनुसार उराँवों की आबादी 19,88,350 बतलाई गई है जो कुल आदिवासी भाषी जातियों की 13.52 प्रतिशत है।

izsj.kk %

कुँडुख भाषा साहित्य में कथा कहानियों एवं इसके प्रकीर्ण साहित्य के अन्तर्गत आने वाले गीतों, बुझौवल, कहावतों, पहेलियों, खेल गीत, मन्त्र आदि विषयों के अलावा पर्व–त्यौहारों, जतरा–सेन्दरा, मेला, सांस्कृतिक उत्सवों तथा सांस्कृतिक धरोहरों के प्रति हमारी जिज्ञासा निरंतर बनी रहती है।

जब से जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं का अध्ययन तथा पठन–पाठन प्रारंभ हुआ एवं इन भाषाओं को पाठ्यक्रमों से जोड़ा गया तब से इसके विविध पहलुओं पर शोध कार्य भी होने लगे हैं इस निरंतर प्रक्रिया में पड़ोसी राज्यों की भाषाई एवं सांस्कृतिक स्थिति के प्रति जिज्ञासा का जागृत होनी भी लाजिमी है।

हमारी स्थानीय लोक संस्कृति साहित्य पर तो काफी कार्य हो चुके है और हो भी रहें हैं परन्तु अन्य उराँव बहुल प्रदेशों में कुँडुख़ भाषियों द्वारा अपने साहित्य पर कितना काम हुआ है या हो पा रहा है इसे जानना तथा वहाँ की भाषाई और साहित्यिक अवस्था पर दृष्टि डालना और इसके विकास की स्थिति तथा संभवनाओं पर विचार करना आज समय की मांग है। साथ ही विभिन्न प्रदेशों में अवस्थित कुँडुख़ समाज की सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक, साहित्यिक पहलुओं की अद्यतन स्थिति को आंकना एक रोमांचक कार्य हो सकता है। राँची विश्वविद्यालय के विभिन्न भाषाविदों तथा डॉ. के. सी. टुडू, डॉ. हरि उराँव, डॉ. उमेश नन्द तिवारी, डॉ. गिरिधारी राम गौंझू, डॉ. कुमारी बसंती

आदि का मार्गदर्शन और विशेषकर इस विषय पर शोध के लिए डॉ. नारायण भगत की प्रेरणा से ही इस दुरूह कार्य के लिए मैं हिम्मत जुटा पाई तथा जशपुर (छत्तीसगढ़) के उराँव लोक साहित्य एवं संस्कृति की नवीनता ने ही इसके शोध के औचित्य को गठित किया, विषय की नवीनता झारखण्ड तथा जशपुर (छत्तीसगढ़) की कुँडुख़ भाषी जनत्य इससे अपने को सम सामाजिक स्थिति के समक्ष कितना संभाल पाई है तथा भूतकाल की परम्परा को किस हद तक सुरक्षित रख पायी है? यही इस शोध का तात्पर्य तथा औचित्य है। सामाजिक संवेदना नष्ट भ्रष्ट होने लगा है, पूर्वजों द्वारा निर्धारित जीवन मूल्यों का बिखरना और परम्परागत अवधारणाओं का अवमूल्यन कही से भी शुभ नहीं है। ऐसे में समाज में कहीं से भी शुभ नहीं है। ऐसे में समाज सांस्कृतिक चेतना को जगाना तथा मौखिक साहित्य में छिपे विशिष्ट गुणों को समाज के सम्मुख निष्पक्ष ढंग से लाकर रखना इस शोध का उद्देश्य होगा। साहित्यिक विकास तथा बचाव ही सामाजिक कल्याण का एकमात्र रास्ता है।

iwoZ ds v/;;u vkSj izLrqr fo"k; dh uohurk %

पिछले कई वर्षों से कुँडुख़ भाषा के विकास पर शोध कार्य हो रहें हैं, प्रकीर्ण साहित्य, गद्य साहित्य, पद्य साहित्य, भक्ति साहित्य, जतरा, गीत व्याकरण तथा नागपुरी, कुरमाली, खोरठा, खड़िया, मुंडारी आदि भाषाओं के साथ तुलनात्मक साहित्यिक विवेचना व्यक्तित्व कृतित्व जैसी तमाम विषयों पर शोध कार्य हुए हैं। परन्तु पड़ोसी कुँडुख़ प्रदेशों तक जाकर शोध कार्य नहीं

किए जा सके हैं। हमारा मानना है कि झारखण्ड के बाहर भी उराँवों की बहुलता है, जिनकी आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक प्रगति पर चिंतन करते हुए हमें अपना दायरा बढ़ाकर अपने साहित्य को समृद्ध करना चाहिए। इस तरह मौलिक और नवीन धाराओं के प्रस्तुत शोध यात्रा से निश्चय ही जानकारियाँ बढ़ेंगी। इस आधार पर इस विषय की महत्व भी निश्चय ही बढ़ जाती है।

क्योंकि अभी तक जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के कुँड़ुख़ शोध विषयों से यह विषय सर्वथा भिन्न है। अभी तक विद्वानों द्वारा निम्न प्रमुख विषयों पर शोध कार्य किए गए हैं–

1. डॉ. नारायण भगत – छोटानागपुर के उराँव रीति–रिवाज
2. डॉ. हरि उराँव – हिन्दी भाषा एवं कुँड़ुख़ भाषा की क्रियाओं का प्रकारात्मक अध्यन
3. डॉ. शांति खलखो़ – उराँव जनजाति में संस्कृतिक परिवर्तन की दिशा
4. डॉ. मंजुला कुमारी – कुँड़ुख़ तथा नागपुरी भाषा का तुलनात्मक अध्ययन
5. डॉ. अलेक्सिसुस ख़ाख़ा – कुँड़ुख मुहावरों और लोकोक्तियों का सांस्कृतिक एवं साहित्य अध्ययन
6. डॉ. इन्द्रजीत उराँव – कुँड़ुख़ साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन
7. डॉ. लक्ष्मी उराँव – पीयुस लकड़ा व्यक्तित्व एवं कृतित्व
8. डॉ. सीता कुमारी – कुँड़ुख़ साहित्य के विकास में संस्थाओं का योगदान

9. डॉ. रामकिशोर भगत – कुँडुख़ संस्कार गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन

10. डॉ. तेतरू उराँव – उराँव लोक साहित्य का अध्ययन

आज जब सांस्कृतिक अपक्षरण, भाषाई अवमूल्यन तथा छीजन प्रक्रिया अविरयस गति से आगे बढ़ती दिखलाई देती है। तब भाषाई संरक्षण के प्रति समाज की उदासीनता अस्मिता व अस्तित्व के लिए उदासीनता कहीं से भी असमक्ष नहीं हैं। इस अशंका का निवारण नयी पीढ़ी को करना है जिन्हें आगाध भाषाई प्रेम के साथ जातीय निष्कीर्ति के लिए कार्य करने की प्रबल इच्छा शक्ति हो।

इसकी प्रसांगिकता का महत्व विभिन्न प्रदेशों तक जा पहुँचे उराँव समाज के बारे जानने तक नहीं है बल्कि उन तक यह संदेश पहुँचाना भी है कि अतीत में पूर्वजों द्वारा चिर संचित लोक साहित्य को संरक्षित संवर्द्धित किया जा सके।

v/; ;u {k=

समस्त कुँडुख़ क्षेत्र जहाँ कुँडुख़ भाषियों की बहुलता है। विशेषकर जशपुर (छत्तीसगढ़) के उराँव क्षेत्र शोध के विषय क्षेत्र होंगे। साथ ही पड़ोसी राज्यों के उराँवों के परिवेश में लोक साहित्य एवं संस्कृति के अवदानों की स्थिति का आकलन झारखण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत हो रहे सांस्कृतिक–साहित्यिक कार्यों के इतर किया जायगा। आवश्यकता पड़ने पर भारत के अन्य राज्यों पर निवास करने वाले लोगों तथा कुँडुख़ भाषा को आधार बनाकर शोध कार्य किया जाएगा।

mís' ; %

चूँकि आधुनिकता का प्रभाव हर कहीं व्याप्त है, भाषा पहिरावा, रहन–सहन, बोल–चाल, गीत, संगीत या कहें जीवन का हर पहलु नये अविष्कारों के प्रभाव में बदलने लगा है। अपनी भाषा–संस्कृति छूटने लगी है, समाज बिखरने लगा है जिसकी चिन्ता, जुगुप्सा उराँव समाज में जगाना है।

'kks/k fof/k %

वास्तविक तथ्यों पर आधारित निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए अनुसंधान कार्य को वैज्ञानिक विधि से कार्य निष्पादन की अपेक्षा होती है। यही अनुसंधान की आवश्यक शर्त है। इसलिए बुनियादी शर्त यह होगा कि भाषाविदों, बुजुर्गों से विचार विमर्श, पत्राचार साक्षात्कार, टेलीफोनिक वार्ता, सामग्री, संकलन प्रकाशित सामग्रियों का अवलोकन क्षेत्र भ्रमण आदि उपयोगी प्रक्रिया तथा उपयोगी उपकरण का सहारा शोध साधन होंगे जिसमें–

1. साक्षात्कार
2. प्रकाशित सामग्रियों का सहयोग
3. संदर्भ ग्रंथ
4. पुस्तकालय
5. विभिन्न संस्थाओं का सहयोग
6. क्षेत्र भ्रमण

7. संकलन एवं लेखन

8. प्रश्नावली

9. सम्बन्धित विद्वानों कलाकारों का सहयोग तथा आवश्यकतानुसार अन्य कारगर विधियों को अपना कर अनुसंधान कार्य किए जाएंगे।

'kks/k dk lekt ij izHkko %

जहाँ तक झारखण्ड क्षेत्र की बात है यहाँ भाषाई संवर्धन संरक्षण के लिए काफी कुछ किया जा रहा है। विभिन्न इलेक्ट्रोनिक मीडिया के संसाधन भी इसके सहायक सिद्ध हो रहे हैं। तथापि ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ संचार साधनों की पहुँच नहीं हो पाई है। वहाँ साहित्य की प्रासंगिकता बनी हुई है। ऐसे में वंचित सामाज के लिए साहित्य ही एक मात्र सहारा है। मनोरंजन के साधन तो नवीन अविष्कारों से सहज उपलब्ध हो रहे हैं किन्तु वास्तविक तथ्यों की जानकारी मौलिक ज्ञान, का विकास तत्व साहित्य से ही परोसा जा सकता है। अपने अतीत में जाने के एकमात्र सुगम मार्ग साहित्य ही है, ''साहित्य समाज का दर्पण है' की उक्ति से हम अपने तथा समाज के आयामों तक जा पाते हैं। आधुनिक समाज को अपने अतीत और वर्तमान से परिचय कराने का एकमात्र साधन साहित्यि ही है, इसी से सामाजिक उत्थान, उन्नति अवन्नति निर्भर करती है। अतः प्रस्तुत शोध समाज को एक दिशा निर्देश देने का प्रयास करेगा।

ऐसे साहित्यावलोकन नवीन पीढ़ी को भी यह प्रेरणा देंगे कि हमारी ज्ञान मिमांसा एक सीमित दायरे तक न रहकर अन्य प्रदेशों के स्वजातीय बन्धुओं की जीवन पद्धति से सीख ले सकेंगे और उनके तथा अपने प्रदेश की वास्तविक

स्थिति का आकलन संभव हो सकेगा। यह जानना संभव होगा कि दोनों प्रदेशों की कुँडुख़ पारम्परिक व्यवस्था लोगों की मानसिकता, साहित्यिक रूचि, अपनी भाषा संस्कृति साहित्य का स्तर क्या है? इसकी पारस्परिक समानताएँ असमानताएँ भी स्पष्ट हो सकेंगी। और निश्चित रूप से दोनों क्षेत्रों के लोगों में एक दूसरे के सामाजिक स्तर का भी आकलन हो सकेगा। साथ ही अन्य कुँडुख़ भाषी क्षेत्रों के साहित्यिक, सांस्कृतिक पहलुओं को जानने उनकी समग्र जीवनशैली को अतीत से लेकर वर्तमान तक उजागर करने की प्रेरणा जागेगी। आपसी जानकारी का आदान–प्रदान हो सकेगा।

midj.k%

1. टेपरिकॉर्ड
2. कैमरा
3. कम्प्यूटर
4. मोबाईल फोन
5. पेन ड्राइब
6. लैपटॉप
7. अन्य

t'kiij d mjkao ykd lkfgR; ,o lLdfr dk fo'y"k.kkRed v/;;u

- प्रस्तावना
- प्रस्तुत शोध की प्रेरणा एवं औचित्य
- प्रस्तुत शोध की विषय सीमा
- प्रस्तुत शोध की विधि
- प्रस्तुत शोध की नवीनता
- प्रस्तुत शोध से सम्बधित विवरण

iFke v/;k; % t i'kj dk lkekU; ifjp;

1. उराँव क्षेत्र का भौगोलिक विवरण
2. भाषा भाषियों की जनसंख्या व क्षेत्र विस्तार
3. सामाजिक स्थिति
4. आर्थिक स्थिति
5. भाषाई स्थिति

f}rh; v/;k; % ykd lkfgR; dh ifjHkk"kk ,o Lo:i] t'kiij d lnHk e

1. लोक गीत
2. लोक कथा
3. लोक गाथा
4. लोक सुभाषित
5. लोक नृत्य एवं वाध यंत्र
6. लोक कलाएँ
7. लोक विश्वास एवं अन्य विधाएँ

r'rh; v/;k; % t'kiqj {k= dh lkLd'frd vo/kkj.kk,¡ ,o io&R;kgkj

1. फगुवा (फग्गु)
2. सरहुल (ख़द्दी)
3. करम
4. सोहराई
5. जतरा
6. सेंदरा
7. अन्य जावियों के साथ सांस्कृतिक समन्वय विसंगितियाँ एवं बाह्य प्रभाव

prqFk v/;k; % t'kiqj {k= dh ifjof'kd fLFkfr

1. सामाजिक स्थिति
2. आर्थिक स्थिति
3. राजनैतिक स्थिति
4. शैक्षणिक स्थिति
5. धार्मिक पृष्ठभूमि

iqpe v/;k; % lkfgR;d lkLd'fr fodkl d fofo/k lHkkfor {k=

1. लोक साहित्य का संकलन संवर्द्धन
2. लोक नाट्य
3. कहानी लेखन
4. उपन्यास
5. कविताएँ
6. अन्य

"k"B v/;k; % lkfgfR;d lkLd`frd lj{k.k esa lLFkkvksa dh Hkwfedk

1. आकाशवाणी
2. दूरदर्शन
3. स्वयं सेवी संस्था
4. इलेक्ट्रोनिक मीडिया
5. अखबार व पत्र–पत्रिकाएँ

lIre v/;k; % t'kiqj ,oa >kj[k.M dh rqyukRed lkfgfR;d] lkLd`frd fLFkfr

1. समानताएँ
2. विषमताएँ
3. संभावनाएँ

milagkj

ifjf'k"V

1. संदर्भ ग्रंथ की सूची
2. पत्र–पत्रिकाएँ
3. साक्षात्कार की सूची
4. चित्रावली

ukV % शोध प्रारूप में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सकता है तथा कुँडुख़, अंग्रेजी, हिन्दी, नागपुरी भाषाओं का सहयोग लिया जा सकता है।

'kks/k funs'kd

Mk- ukjk;.k Hkxr
प्राध्यापक (कुँडुख़)
डोरण्डा महाविद्यालय, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

'kks/kdrkZ

jhek frXxk
एम.ए. कुँडुख़
यू0जी0सी, नेट/जे0आर0एफ
स्नातकोत्तर कुँडुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

vk/kkj xzFkksa dh lwph

Ø-	ys[kd	iqLrd	izdk'kd	izdk'ku
1.	अमरोहित, डॉ. गीतेश कुमार	छत्तीसगढ़ कला एवं संस्कृति	सरस्वती बुक्स भिलाई (छत्तीसगढ़), नई दिल्ली	2001
2.	कुजूर, मिखाइल	उराँव संस्कृति	कृषि विकास केन्द्र भूसाड़ (पलामू)	1993
3.	उराँव, कृतनारायण राम	आदिवासियों की प्राचीन धार्मिक मान्यताएँ आदि धर्म	पादा पड़हा छत्तीसगढ़	2016
4.	उराँव, तेतरू	उराँव लोक साहित्य एक अध्ययन	झारखण्ड झरोखा	2021
5.	टी.के, डॉ. वैष्णव	छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जनजातियाँ	आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान रायपुर	2004
6.	भगत, कैलाश राम	कुँड़ुख़ करम गीत	पादा पड़हा छत्तीसगढ़	2014
7.	मिंज, डॉ० उषा रानी	हिया खोल		
8.	तिर्की, बोनीफस	उराँव सिम्बल		1983
9.	तिर्की, बोनीफस	प्रसन्नमुख उराँव		1989

lUnHkZ xzUFkksa dh lwph

Ø-	ys[kd	jpuk	izdk'kd	o"kZ
1.	अनुज, डॉ. भुवनेश्वर	झारखण्ड के शहीद	झारखण्ड झरोखा	2013
2.	उराँव इन्द्रजीत	पुना खोर	झारखण्ड झरोखा	1986
3.	उराँव डॉ. तेतरू	पुरखर गही खीरी	विजयनगरम अरा क्योतो	2021
4.	उराँव, डॉ. हरि	हिन्दी भाषा और कुँडुख़ भाषा की क्रियाओं का प्रकारात्मक अध्ययन	के0के0 पब्लिकेशन	2010
5.	कुजूर, बसंती कुमारी	दव बिल्ली	अतिम प्रकाशन	2008
6.	कुँडुख़ भाषा प्राध्यापक	कत्थ खीरी	झारखण्ड जनजाति कल्याण	2006
7.	कुजूर, ब्रदर मिखाएल	उराँव संस्कृति	–	1993
8.	ख़लख़ो, डॉ. शान्ति	कुँडुख़ सिखाना डण्डी	हिन्दुराजी कुँडुख़ वकलुरिया खोड़हा	2010
9.	गौंझू, डॉ. गिरिधारी राम	अखरा निंदाय गेलक	–	1990
10.	टोप्पो, एडमण्ड	कुँडुख़ कत्थ खीरी	अखरा टेस्ट बुक समिति राँची	1976
11.	टोप्पो, नीलम	कुँडुख़ हिन्दी शब्दकोश	–	1998

12.	टुडू, डॉ. के	झारखण्ड आदिवासी जीवन और समाज	–	–
13.	तिरकी, भीखु	उराँव–सरना धर्म और संस्कृति	झारखण्ड झरोखा राँची	2011
14.	बाखला, शान्ति प्रकाश प्रबल	कुँड़ुख़ भाषियों का वृतांत	जी.ई.एल. चर्च रोड, राँची	1964
15.	भगत, डॉ. नारायण	छोटानागपुर के उराँव रीति–रिवाज	झारखण्ड झरोखा	2013
16.	भगत, डॉ. नारायण	भरिया (नाटक)	झारखण्ड झरोखा, राँची	2016
17.	भगत, डॉ. नारायण	सिन्दरी (उपन्यास)	झारखण्ड झरोखा, राँची	1995
18.	भगत, डॉ. नारायण, उराँव डॉ. नारायण	ईन्नलता कुँड़ुख़ कत्थअइन	झारखण्ड झरोखा, राँची	2018
19.	मुण्डा, डॉ. रामदयाल	आदि धरम	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली	2009
20.	लकड़ा, पियुस	कुँड़ुख़ कत्थपण्डी	काथलिक प्रेस राँची	1989
21.	लकड़ा धर्मदास	कुँड़ुख़ खीरी अरा कुँड़ुख डण्डी	जनजातीय भाषा अकादमी राँची	1930–35

lUnHkZ i=&if=dk

lEiknd	i=&if=dk	o"kZ
उराँव, डॉ. हरि	सरना फूल	1987
उराँव, डॉ. हरि	बकपून	2011
उराँव, डॉ. हरि	कुँडुख़ कत्थ बिड़रना	2006
उराँव, डॉ. हरि	संवसे ख़ेखेलता कुँडुख़ कत्था	2012
KLSI	कुँडुख़ डहरे	2007
खलखो, बन्दे	पड़हा	जून 2015
टेट, बंदना	अख़डा	
तिर्की, महली लिवीनस	सिनगी दई	1986
तिर्की, डॉ. अगपित	एजरआ	1988
तिर्की, डॉ. अगापित	नाम कुँडुख़	1988
तिर्की, आहलाद	धुमकुड़िया	1949–52
अखिल भारतीय	ट्राइबल इण्डिया–कार्तिक उराँव	2014
अददी अखड़ा प्रकाशन राँची	बक्कहुही शब्दकान्ति)	2017
विकास परिषद्	जयन्ति समारोह	
कोकर राँची	प्रभात खबर	
राँची	हिन्दुस्तान	
राँची	दैनिक भाष्कर	

t'kiqj dh mjkao yksd lkfgR; ,oa laLd`fr dk fo'ys"k.kkRed v/;;u

पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–izk:i

LukrdksaRrj dqM+[k foHkkx] jk¡ph fo'ofo|ky;] jk¡ph

ladk; % tutkrh; ,oa {ks=h; Hkk"kk

o"kZ % 2023

'kks/k funs'kd

Mk- ukjk;.k Hkxr
प्राध्यापक (कुँडुख़)
डोरण्डा महाविद्यालय, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

'kks/kdrkZ

jhek frXxk
एम.ए. कुँडुख़
यू०जी०सी, नेट / जे०आर०एफ
स्नातकोत्तर कुँडुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची